एम.एस.सी. – एक परिचय

- समाज के हित के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों का असर मापने की एक तकनीक।
- पारंपरिक तकनीकों से अलग क्योंकि इसमें सभी की भागीदारी होती है– जैसे सेवा देने वाले, सेवा पाने वाले (ग्रामवासी), सरकारी सेवक, गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि, इत्यादि।

- इस तकनीक में कार्यक्रम की वजह से हुए अच्छे बदलावों को कहानियों के माध्यम से एकत्र किया जाता है।
- कहानियों का चयन कुछ मुख्य व्यवहारों में परिवर्तन के रूप में किया जाता है, जैसे– बाल बन्धु परियोजना के संदर्भ में ये मुख्य व्यवहार हैं –
  - जन्म के बाद पहले 6 माह तक बच्चे को केवल स्तनपान कराना
  - खाने से पहले, शौच के बाद, हाथ साबुन से धोना
  - लड़कियों की स्कूली षिक्षा सुनिश्चित करना
  - एच.आई.वी.–एड्स का ज्ञान एवं सुरक्षित यौन व्यवहार रखना

  अतः बाल बंधु परियोजना के संदर्भ में एम.एस.सी. की कहानियाँ ऊपर लिखे चार मुख्य व्यवहारों में परिवर्त्तन को बताएँगी।
- कहानियाँ स्पष्ट प्रभाव क्षेत्रों से चुनी जाती हैं, जैसे – बाल बंधु परियोजना का प्रभाव मापने के लिए हमारे दो प्रभाव क्षेत्र हैं –

  (i) सेवा देने वाले/बाल बंधुओं की कहानियाँ

  (ii) सेवा पाने वाले (बाल बंधु परियोजना के अंतर्गत आने वाले गाँवों के निवासी) की कहानियाँ
- सभी एकत्रित कहानियों में से अंत में एक सबसे महत्त्वपूर्ण बदलाव (एम.एस.सी.) की कहानी का चयन विभिन्न चरणों से होते हुए किया जाता है।
- अंत में चुनी गई कहानी ही सबसे महत्त्वपूर्ण बदलाव यानी "मोस्ट सिग्निफिकेंट चेंज" (एम.एस.सी.) वाली कहानी होती है।
- एम.एस.सी. के परिणामों का उपयोग सरकार अपने भविष्य के कार्यक्रमों की रूपरेखा बनाने एवं लोगों तक अपने संदेष पहुँचाने के लिए कर सकती है।
- यूनीसेफ एवं गैर सरकारी संगठन जैसे सारथी इत्यादि इसका उपयोग अपने कार्यक्रमों के प्रभाव को मापने, सरकार तक अपनी बात पहुँचाने, कार्यक्रमों को बेहतर ढंग से चलाने और समाज के लोगों को प्रेरित करने के लिए कर सकते हैं।